Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.11, June, 2024**

An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.02, No.11, June, 2024
http://knowledgeableresearch.com/

उत्तर प्रदेश के प्रमुख हस्तशिल्प और उनके विकास हेतु विभिन्न संस्थाए एवं योजनाएं

अर्चना गर्ग

असिस्टेंट प्रोफेसर,(चित्रकला विभाग)

स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज,शाहजहांपुर।

Email: arc.garg10@gmail.com

****

शोध सारांश

उत्तर प्रदेश एक ऐसा राज्य है जो विभिन्न कलाओं और शिल्पों से समृद्ध है। उत्तर प्रदेश ऐसे कई अनोखे और विभिन्न शिल्पों का घर है जो इसे सांस्कृतिक रूप से सबसे समृद्ध राज्य बनाते है। विभिन्न संस्कृतियों का घर होने के कारण उत्तर प्रदेश के शिल्प में विविधताएं पायीं जाती हैं। यहां की कला और शिल्प की उसी विरासत को उत्तर प्रदेश के लोगों ने अब तक आगे बढ़ाया है और यही कारण है कि उत्तर प्रदेश के शिल्प और हस्तशिल्प विश्व प्रसिद्ध हैं। उत्तर प्रदेश अपनी अनूठी कला और शिल्प के लिए प्रसिद्ध है जो इसकी समृद्ध विरासत, परंपराओं और संस्कृति को बताता है। उत्तर प्रदेश विभिन्न प्रकार के शिल्प ,रेशमी साड़ियों , मिट्टी के बर्तनों, बुने हुए कालीन, इत्र आदि के लिए प्रसिद्ध हैं।आगरा और कानपुर अपने चमड़े की वस्तुओं के लिए, मुरादाबाद अपनी धातु की कलाकृतियों के लिए और लखनऊ अपनी चिकनकारी कढ़ाई के लिए जाने जाते हैं।प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश के विभिन्न हस्तशिल्पों एवं उनके विकास हेतु संलग्न विभिन्न संस्थाओं और योजनाओं से अवगत कराता है।

मुख्य शब्द: *उत्तर प्रदेश हस्तकला, जरी, जरदोजी, चिकनकारी, पॉटरी, टेराकोटा, हाथ की छपाई,कालीन बुनाई, संस्थाएं, योजनाएं*

****

भूमिकाः

हस्तशिल्प, उन सभी कलात्मक वस्तुओं का सम्मिलित रूप है जिनका निर्माण मानव द्वारा हाथों से किया जाता है। उत्तर प्रदेश, भारत के प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक है जो अपनी विशिष्ट कला, हस्तशिल्प, संगीत, नृत्य इत्यादि को प्रदर्शित करता है। राज्य के हस्तशिल्प में लकड़ी के सामान, मिट्टी के बर्तन, वस्त्र, पत्थर के काम तथा आभूषण निर्माण इत्यादि शामिल हैं।

उत्तर प्रदेश के शिल्प राज्य के विभिन्न भागों में उत्पादित होते है। वाराणसी शहर रेशमी साड़ियों के लिए लोकप्रिय है, जबकि भदोही कालीन का उत्पादन करता है। आगरा और कानपुर शहर अपने चमड़े के शिल्प के लिए प्रसिद्ध हैं और मुरादाबाद में धातु के बर्तन

Author Name: अर्चना गर्ग
Received Date: 06.06.2024
Publication Date: 30.06.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.11, June, 2024**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

बनते है। लखनऊ चिकनकारी कढ़ाई का उत्पादन करता है, जो दुनिया भर में प्रसिद्ध है। खुर्जा मिट्टी के बर्तन के लिए, फिरोजाबाद कांच की चूड़ियों के लिए, बरेली जरदोजी के लिए,सहारनपुर लकड़ी के काम के लिए लोकप्रिय हैं।

चिकनकारी कढ़ाई

चिकनकारी लखनऊ की कढ़ाई एवं कशीदाकारी की प्रसिद्ध शैली के रूप में जानी जाती है। यह जटिल सुइयों के साथ कपड़े पर की जाने वाली एक बहुत ही नाजुक कढ़ाई है। इस कला को मूर, लरची, कील कंगन और बखिया जैसी विभिन्न शैलियों में देखा जा सकता है। परंपरागत 32 स्टिचो के साथ-साथ मुकैरा, कामदानी,बदला, सीक्वेंस, मोती व शीशे का अलंकरण भी किया जाने लगा है ।उत्तर प्रदेश में चिकनकारी के काम वाली साड़ी और सलवार सूट मिलते हैं। उत्तर प्रदेश की चिकनकारी कढ़ाई शिफॉन, मलमल, ऑर्गेना, ऑर्गेंडी और रेशम जैसे कपड़ों पर की जाती है। आधुनिक रेशमी धागे तथा सफेद धागों के साथ रंगीन धागों का भी प्रयोग किया जाने लगा है। चिकनकारी कपड़े को शाही बनाती है। लखनऊ की चिकनकारी को आई जी टेग प्राप्त है। चिकनकारी की यह कला अब मात्र लखनऊ शहर में न रहकर आसपास के अंचलों व गांव तक फैल चुकी है जिससे बहुत से परिवारों को आय का साधन भी उपलब्ध हुआ है।1

जरी कढ़ाई

उत्तर प्रदेश का सबसे पुराना शहर वाराणसी अपने जरी के काम के लिए प्रसिद्ध है। परंपरागत रूप से, साड़ियों पर डिज़ाइन और पैटर्न बनाने के लिए सोने और चांदी के धागों को ढाला जाता है। साड़ी पर जरी का काम रॉयल लुक देता है। ज़रदोज़ी कढ़ाई एक और अनूठी कला है जहाँ कढ़ाई तीन अलग-अलग आयामों में की जाती है। वाराणसी सिल्क, वाराणसी ब्रोकेड का दूसरा नाम है, जो उत्तर प्रदेश की एक प्रसिद्ध हस्तकला उत्पाद है। साड़ी सूती कपड़े से, सोने और चांदी के धागों और महीन रेशम से बनी होती है, जिससे कई तरह के डिजाइन और पैटर्न बनते हैं। इनकी बुनाई के आलेखनो में गहन गुथाई द्वारा फूल पत्तियों का रूपांकन किया जाता है।भारतीय शादियों में बनारसी साड़ियों का खास महत्व है।फ़ैब्रिक पर भारी काम शाही लुक दिखाता है। स्थानीय शिल्पकारों द्वारा उत्पादित बनारसी साड़ियां भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में अपनी पहचान रखती है।बनारसी साड़ियों में वाराणसी के ज़री के काम दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं।

पत्थर के शिल्प

उत्तर प्रदेश का स्टोन क्राफ्ट एक विशेष उल्लेख के योग्य है क्योंकि यह उत्तर प्रदेश की सबसे सुंदर कला और हस्तशिल्प में से एक है। विशेष रूप से मुगलों के शासन में यह पत्थरबाजी कौशल व्यापक रूप से फला-फूला। आगरा शहर में ताजमहल उत्तर प्रदेश में पत्थर शिल्प कौशल का सबसे सुंदर उदाहरण है। उत्तर प्रदेश के पत्थर के इस शिल्प को खरीदने और देखने के लिए कुछ दर्शनीय स्थल आगरा, वाराणसी और फतेहपुर सीकरी हैं। विस्तृत नक्काशी, मूर्तियां, सजावटी सामान स्टोनक्राफ्ट के सबसे लोकप्रिय उदाहरण हैं।

कालीन बुनाई

फारसियों के कौशल को अपनाते हुए, कालीन बुनाई उत्तर प्रदेश की सबसे अद्भुत कलाओं और शिल्पों में से एक बन गई है। सबसे लोकप्रिय हस्तकला कालीन बुनाई की शुरुआत भारत में मुगल शासन के दिनों से होती है। उत्तर प्रदेश के भदोही को 'कारपेट सिटी' भी कहा जाता है। उत्तर प्रदेश के भदोही, शाहजहांपुर और मिर्जापुर शहर कालीन उत्पादन के केंद्र हैं।कालीन बुनाई उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में अधिकांश लोगों के लिए एक आम पेशा है और यह उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी कला और हस्तशिल्प में से एक बन गया है। उत्तर प्रदेश के कालीनों को

Author Name: अर्चना गर्ग
Received Date: 06.06.2024
Publication Date: 30.06.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.11, June, 2024**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

कई उल्लेखनीय शैलियों और वनस्पतियों, जीवों और अन्य पैटर्न के डिजाइनों में डिजाइन किया गया है। भारत में उत्पादित कुल कालीनों में उत्तर प्रदेश का योगदान 90% है।

पीतल के बर्तन

उत्तर प्रदेश भारत में पीतल और तांबे की वस्तुओं का प्रमुख उत्पादन करने वाला राज्य है। इटावा, बनारस, सीतापुर उत्तर प्रदेश के कुछ शहर हैं जो इस प्रकार की धातु की कलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध हैं। मुरादाबाद का क्षेत्र उत्तर प्रदेश में अपने धातु के काम, रंगों और जटिल नक्काशी के लिए लोकप्रिय है। दो प्रकार की धातु की नक्काशी की जाती है - एक ऊपरी सतह पर की जाती है और उसे नक्काशी कहा जाता है, जबकि दूसरी को खुदाई के रूप में जाना जाता है और लाख के साथ बिना पॉलिश की हुई सतह पर की जाती है। धातु के पीतल के बर्तन में कई सुंदर पारंपरिक पात्र , गणेश, लाफिंग बुद्धा, स्टूल, ट्रे, फूलदान, देवी-देवताओं की मूर्तियां और अन्य सजावटी सामान शामिल है। पीतल के बर्तन पर कला उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध शिल्पों में से एक है।

कांच के बर्तन

कांच का सामान उत्तर प्रदेश में कांच कला के सबसे प्रसिद्ध रूपों में से एक है। फ़िरोज़ाबाद, वाराणसी और सहारनपुर शहर उत्तर प्रदेश में विभिन्न प्रकार के कांच-उन्मुख हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध हैं। ढाला कांच का सामान उत्तर प्रदेश की सबसे सुंदर कला और शिल्प में से एक है। उत्पादन हेतु कांच को उच्च तापमान पर गर्म करके पिघलाया जाता है और मुलायम होने पर वांछित आकार दिया जाता है। कुछ बेहतरीन कांच के सामान में रंगीन कांच की चूड़ियाँ, सुंदर झूमर, गहने, कटलरी सेट शामिल हैं।कांच की चूड़ियों का उत्पादन मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में होता है इसलिए फिरोजाबाद को "चूड़ियों का शहर" भी कहा जाता है। विश्व प्रसिद्ध कांच के मोती वाराणसी में निर्मित होते हैं।

मिट्टी के बर्तन

उत्तर प्रदेश में मिट्टी के बर्तन बनाने की कला सदियों पुरानी परंपरा है। मिट्टी के बर्तनों का इतिहास लगभग 600 साल पहले का है। उत्तर प्रदेश में मेरठ, खुर्जा और हापुड़ ऐसे स्थान हैं जो मिट्टी के बर्तनों में अपने कौशल के लिए जाने जाते हैं। हस्तनिर्मित बर्तन सुंदर पुष्प डिजाइन और जीवंत रंगों के पैटर्न से अलंकृत होते हैं। मिट्टी के बर्तनों की एक अनूठी रचना सुराही है, एक लंबी गर्दन वाला बर्तन। इनका उपयोग गर्मियों में पानी को ठंडा रखने के लिए किया जाता है और सजावट के टुकड़ों के रूप में भी ये बहुत अच्छे होते हैं। उत्तर प्रदेश के शहर जैसे खुर्जा, चुनार, रामपुर और निजामाबाद अपने मिट्टी के बर्तनों के काम के लिए प्रसिद्ध हैं। मिट्टी के बर्तन उत्तर प्रदेश में एक विशेष हस्तकला है जो विभिन्न रूपों, पैटर्न और रंगों के साथ बनाई जाती है। खुर्जा पॉटरी पूरी दुनिया में लोकप्रिय है पारंपरिक मटका, पॉट के साथ चाय दान सेट ,कॉफी मग, डिनर सेट, फूलदान एवं आधुनिक पाटरी नई डिजाइन के साथ दिखाई दे रही है। कलात्मक नमूनो में भी बदलाव आया है। डिजाइनों में परंपरा और आधुनिकता दोनों का पुट है कहीं कहीं इस्लामिक और अरेबिक डिजाइन भी दिखाई देते हैं। पत्तेदार डिजाइन जापानी हाइकू से प्रभावित है । खुर्जा पॉटरी में जयपुर की नीली पॉटरी की भी झलक दिखाई देती है।[2]

Author Name: अर्चना गर्ग
Received Date: 06.06.2024
Publication Date: 30.06.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.11, June, 2024**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

उत्तर प्रदेश का इत्र मुगल काल से प्रसिद्ध है। इत्र में कुछ प्रसिद्ध सुगंध चमेली, हिना, गुलाब और खस हैं। उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों जैसे आगरा, लखनऊ, अलीगढ़, रामनगर, गाजीपुर, सहारनपुर और कन्नौज में गुलाब इत्र की खेती की जाती है। उत्तर प्रदेश को इसके इत्र के कारण "सार की राजधानी" के रूप में भी जाना जाता है।

लखनऊ में इत्र के निर्माता इत्र कला में उस्ताद हैं। उनकी लंबे समय तक चलने वाली सुगंध जो सूक्ष्म हैं और विभिन्न सुगंधित तेलों, जड़ी-बूटियों, चंदन, कस्तूरी और फूलों और पत्तियों की सुगंध का उपयोग करके बनाई गई हैं। वे खस, अगर, केवड़ा, चमेली और जाफरान सहित कुछ बेहतरीन सुगंध तैयार करते हैं।

टेराकोटा

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के गाँव जानवरों की मिट्टी की मूर्तियाँ बनाते हैं जो अपने सजे हुए टेराकोटा घोड़े के लिए प्रसिद्ध हैं। चक्र पर मिट्टी के अलग-अलग टुकड़े रखकर मूल रूप बनाया जाता है, जिसे बाद में तराशा जाता है। टेराकोटा के घोड़े उत्तर प्रदेश के अन्य शहरों के कारीगरों द्वारा भी बनाए जाते हैं।

जरी जरदोजी की कला

बरेली की जरी जरदोजी की कला देश में ही नहीं विदेशों में भी अपनी अलग पहचान रखती है। इस उद्योग से हजारों कलाकार जुड़े हुए हैं हाजी शकील कुरेशी उद्यमी की जरी इंडिया कंपनी में लगभग तीन लाख कारीगरों ने रजिस्ट्रेशन कराया है । ऐसा माना जाता है कि बरेली में लगभग आठ लाख जरी कारीगर हैं जिनमें तीन लाख महिलाएं हैं जरी जरदोजी कार्य कार्य में बरेली का बड़ा योगदान है। बरेली उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ एवं भारत की राजधानी दिल्ली के समीप है प्राचीन काल में इसे बांस बरेली के नाम से जाना जाता था रामगंगा नदी के तट पर बसा हुआ बरेली उत्तराखंड के उधम सिंह नगर की बहेड़ी तहसील की सीमा के निकट है।[3]

परंपरागत डिजाइनों के साथ आज के कलाकार आधुनिक रूप और रंगों का प्रयोग करने लगे हैं रंग बिरंगे, सुनहरे धागों से सुंदर रूप एवं आकर सभी को अपनी और आकर्षित करते हैं। विभिन्न कारीगर एक थीम को लेकर भी कार्य कर रहे है। मुख्य रूप से जॉर्जेट, शिफॉन, सूती कपड़े पर कार्य किया जा रहा है। डिजाइन विकास और प्रशिक्षण केंद्र बरेली में स्थापित हो चुका है सरकार द्वारा चलाई जा रहे कौशल विकास केंद्र के अंतर्गत कार्यशालाएं चलाई जा रही है जिससे ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रशिक्षित किया जा सके।

प्राचीनकाल से ही लोककला व्यवसाय के क्षेत्र में भारत विश्वविख्यात रहा है। सूती लोक कलात्मक वस्त्रों की उत्पत्ति उत्तर भारत में हुई। जिसके प्रमाण अभी तक संरक्षित हैं। आज से बीस-पच्चीस शताब्दी पूर्व भी भारतीय लोक कलात्मक वस्त्र विदेशियों को निर्यात किये जाते थे और यह सिलसिला प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक चलता रहा है।[4]

उत्तर प्रदेश में हथकरघा और कपड़ा उद्योग

उत्तर प्रदेश कई प्रसिद्ध कपड़ा समूहों का घर है जो कालीन, गलीचे और चटाई सहित कई प्रकार के कपड़े और परिधान तैयार करते हैं। राज्य में बुनाई, कताई, परिधान डिजाइन और विनिर्माण की भरपूर संभावनाएं मौजूद हैं।

Author Name: अर्चना गर्ग
Received Date: 06.06.2024
Publication Date: 30.06.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.11, June, 2024**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

हथकरघा

उत्तर प्रदेश अपने हथकरघा उत्पादों, जैसे साड़ी , कालीन और शॉल के लिए जाना जाता है। राज्य में वाराणसी, लखनऊ और कानपुर सहित कई हथकरघा क्लस्टर हैं।

विद्युत से चलने वाला करघा

उत्तर प्रदेश में पावरलूम क्षेत्र भी बढ़ रहा है, जिसकी कई इकाइयाँ मेरठ, मुरादाबाद और भदोही जैसे शहरों में स्थित हैं। राज्य सरकार ने इस उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कानपुर में टेक्सटाइल पार्क स्थापित किया है।

गारमेंट

उत्तर प्रदेश में कपड़ा उद्योग नोएडा, गाजियाबाद और आगरा जैसे शहरों पर केंद्रित है। इस क्षेत्र के कुछ प्रमुख खिलाड़ियों में ओरिएंट क्राफ्ट , शाही एक्सपोर्ट्स और गोकलदास एक्सपोर्ट्स शामिल हैं।देश के प्रत्येक राज्य की राजधानी में, केंद्र शासित राज्यों में तथा बनारस के अति महत्वपूर्ण केंद्रों में स्थित विवर्स सर्विस सेंटर अपने-अपने क्षेत्र की परंपराओं, कताई ,बुनाई, रंगाई, छपाई, कशीदाकारी आदि को संरक्षित एवं विकसित करने का कार्य सफलतापूर्वक कर रहे हैं।[5]

भारतीय लोक कला के पारंपरिक तथा नवीन संयोजन एवं उनकी विभिन्न विधियो को संकलित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है कुछ सरकारी संस्थान भी हैं जो कि भारत की परंपरागत लोक कला की अमूल्य निधि को संरक्षित एवं पोषित कर रहे हैं।

हस्तशिल्प विकास में संलग्न विभिन्न संस्थाए

1.भारतीय हस्तशिल्प और हथकरघा निर्यात संस्थान

2.सेंट्रल कॉटेज इंडस्टरीज प्राइवेट लिमिटेड

3.ऑल इंडिया हैंडलूम फैब्रिक मार्केटिंग कोऑपरेटिव सोसाइटी

4.ऑल इंडिया कारपेट मैन्युफैक्चरिंग एसोसिएशन भदोही ,वाराणसी, उत्तर प्रदेश

5.ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ़ जैरी इंडस्ट्री सेफ डिपॉजिट चैंबर्स, सूरत, गुजरात

6.ऑल इंडिया टैक्सटाइल हैंड प्रिंटिंग फेडरेशन प्रसाद चैंबर्स स्वदेशी मिल स्टेट ,मुंबई।[6]

उत्तर प्रदेश में हस्तशिल्प अपनी परंपरागत शैली के कारण हस्तशिल्प उद्योगों में विशेष स्थान रखता है जिसकी मांग अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी है । देश के कुल निर्यात में लगभग 70% भागीदारी हस्तशिल्प की है । उत्तर प्रदेश में लगभग 30 लाख हस्तशिल्पी है। राज्य सरकार हस्तशिल्प उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए निरंतर प्रयासरत है और उसके विकास हेतु विभिन्न योजनाओं को चला रही है।

Author Name: अर्चना गर्ग
Received Date: 06.06.2024
Publication Date: 30.06.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.11, June, 2024**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

कौशल विकास योजना

उद्देश्य

हस्तशिल्प क्षेत्र में परंपरागत तरीके से हो रहे कार्य को बेहतर तकनीक से कराना एवं इस हेतु उनके विकास की दृष्टि से प्रशिक्षित करना इस योजना का मुख्य उद्देश्य है।

योजना

योजनांतर्गत परंपरागत शिल्पकारों के कौशल उन्नयन हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें नवीनतम तकनीक एवं उपकरणों के उपयोग भी सिखाए जाते हैं। यह प्रशिक्षण भारत सरकार के राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार व दक्षता पुरस्कार प्राप्त शिल्पकारों तथा विकास आयुक्त हस्तशिल्प द्वारा शिल्प गुरु की उपाधि से अलंकृत शिल्पकारों के घरों में उन्हीं के व्यक्तिगत निर्देशन व संरक्षण में संचालित किया जाता है।[7]

अखिल भारतीय हस्तशिल्प सप्ताह का आयोजन

हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित वस्तुओं की लोकप्रियता में वृद्धि करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष विकास आयुक्त भारत सरकार नई दिल्ली से प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुसार देश एवं प्रदेश में एक साथ दिनांक 8 दिसंबर से 15 दिसंबर तक अखिल भारतीय हस्तशिल्प सप्ताह मनाया जाता है इस अवसर पर हस्तशिल्प वस्तुओं की बिक्री पर विशेष छूट प्रदान की जाती है तथा प्रदर्शनियों ,गोष्ठियों, जनपद के ख्याति प्राप्त अनुभवी शिल्पकारों की कार्यशालाओं का भी आयोजन किया जाता है।[8]

निष्कर्ष

हमारे देश के लगभग सभी गांव शहरों में लोक कला का कार्य घरेलू कारीगरों के द्वारा किया जा रहा है। बुनाई ,छपाई, कशीदाकारी का कार्य अधिकांशतः महिलाएं परंपरागत विधियो के द्वारा करती नजर आती है। ग्रामीण क्षेत्रो के कारीगर मिलकर छोटी-छोटी सभाओ का निर्माण करते हैं ये सभाएं अपने क्षेत्र की हस्तशिल्प संस्था अथवा किसी बड़ी विक्रय कंपनी से जुड़ी होती है और अपने कारीगरों द्वारा निर्मित सामान के विक्रय का कार्य करती है साथ ही अपने कारीगरों को आर्थिक सहायता भी प्रदान करती हैं और उनके कार्य को प्रोत्साहित भी करती हैं। इस प्रकार उत्तर प्रदेश का प्रत्येक नगर विशिष्टं हस्तशिल्प निर्माण की समता, दक्षता और कुशलता प्रदर्शित करता है। 'एक जिला, एक उत्पाद' जैसी योजनाओं के द्वारा राज्य सरकार हस्त-शिल्प को संरक्षित व प्रोत्साहित कर रही है। जिससे प्रदेश के प्रत्येक जिले के हस्तशिल्प की पहचान सुस्थापित होगी और उनका व्यवसायीकरण होगा।निश्चय ही इस प्रयास से हस्तशिल्प कलाओं की गुणवत्ता बनी रहती है। संस्कृति एवं प्राचीन धरोहर को सहेजने में सहायता होती है और हस्तशिल्प का प्रचार प्रसार देश विदेश में होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Yogesh, P. (2000). Kala Tremasik Lucknow ka Terracotta Shilp kala Tremasik Secretary, State Lalit Kala Akademy

2. Tiwari, S. (2018). Sharasthi Parv Kumbh. Allahabad: Anamika Prakashan

3. Dhamija, (2011) Indian Folk Arts and Crafts Publisher. National Trust Book, India.

Author Name: अर्चना गर्ग
Received Date: 06.06.2024
Publication Date: 30.06.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.11, June, 2024**

An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

4. स्वयं सर्वेक्षण के आधार पर 20-11-2013

5. www.iiaonline.in

6. समकालीन कला अकादमी, जुलाई- 2005, अक्टूबर, अंक 27, पृष्ठ सं. 30-40

7. कृष्णन, डॉ. के.एस., नई दिल्ली-जनवरी-2009 राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्त्रोत, विज्ञान प्रगति- पृष्ठ सं. 20-24

8. नई दिल्ली, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पत्रिका, पृष्ठ सं. 24-27

Author Name: अर्चना गर्ग

Received Date: 06.06.2024
Publication Date: 30.06.2024